

## Chapter तिरपन

### कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का अपहरण

इस अध्याय में बतलाया गया है कि भगवान् श्रीकृष्ण किस तरह विदर्भ की राजधानी कुण्डिन पहुँचे और बलशाली शत्रुओं की उपस्थिति में उन्होंने रुक्मिणी का अपहरण किया।

जब कृष्ण ब्राह्मण-दूत से रुक्मिणी का पत्र सुन चुके तो भगवान् ने उससे कहा, “असल में, मैं रुक्मिणी के प्रति आकृष्ट हूँ और जानता हूँ कि उसका भाई रुक्मी मेरे साथ उसके विवाह का विरोध करता है। इसलिए मुझे सारे निम्नवर्गीय राजाओं का दमन करके उसका अपहरण उसी तरह करना चाहिए जिस तरह लकड़ी में से घर्षण द्वारा अग्नि उत्पन्न की जाती है।” चूँकि रुक्मिणी तथा शिशुपाल का यह विवाह केवल तीन दिनों के भीतर सम्पन्न होने को था अतः भगवान् कृष्ण ने दारुक से कहा कि वह तुरन्त रथ को तैयार करे। तत्पश्चात् वे तुरन्त विदर्भ के लिए रवाना हो गये जहाँ वे रात-भर यात्रा करने के बाद पहुँच गये।

राजा भीष्मक अपने पुत्र रुक्मी के स्नेह में फँस कर अपनी पुत्री शिशुपाल को देने के लिए तैयार था। उसने सभी आवश्यक तैयारियाँ करवा लीं—उसने नगर को अनेक प्रकार से सजवाया और मुख्य सड़कों तथा चौराहों की सफाई करवाई। चेदिराज दमघोष भी अपने पुत्र के विवाह के लिए सारी आवश्यक तैयारियाँ करके विदर्भ आ पहुँचा। राजा भीष्मक ने उसका समुचित सत्कार किया और ठहरने के लिए स्थान प्रदान किया। अन्य अनेक राजा—यथा जरासन्ध, शाल्व तथा दन्तवक्र—भी इस

अवसर को देखने आये। कृष्ण के इन शत्रुओं ने षड्यंत्र रचा था कि यदि कृष्ण आयें तो दुलहन (वधू) का अपहरण कर लिया जाय। उन्होंने मिलकर कृष्ण से युद्ध करने की तैयारी कर ली और शिशुपाल को उसकी दुलहन दिलाने का पक्का इरादा कर लिया। ये योजनाएँ सुनकर बलदेवजी अपनी सारी सेना एकत्र करके तेजी से कुण्डिनपुर पहुँच गये।

विवाह के पूर्व की रात में रुक्मिणी विश्राम करने जा रही थीं किन्तु तब तक न तो ब्राह्मण आया था न ही कृष्ण। चिन्तामग्न वे अपने दुर्भाग्य को कोस रही थीं। तभी उनका बायाँ अंग फड़का और शुभ शकुन हुआ। दरअसल तुरन्त ही ब्राह्मण वहाँ आ पहुँचा और कृष्ण ने जो कुछ कहा था वह सारा हाल कह सुनाया—इसमें उनके अपहरण का पक्का वायदा भी था।

जब राजा भीष्मक ने सुना कि कृष्ण तथा बलराम आये हैं, तो वह बाजे-गाजे के साथ उनके सत्कार के लिए गया। उसने अनेक उपहारों के साथ उन दोनों की पूजा की और फिर उनके विश्राम के लिए स्थान निर्दिष्ट किया। इस तरह राजा ने इन दोनों की वैसी ही आवभगत की जैसी कि अन्य असंख्य राजसी अतिथियों के लिए की थी।

विदर्भ के लोग भगवान् कृष्ण को देखकर परस्पर बातें करने लगे कि वे ही रुक्मिणी के योग्य पति हैं। वे प्रार्थना करने लगे कि उनके जो भी पुण्यकर्म हों उनके बल पर कृष्ण का रुक्मिणी से पाणिग्रहण हो जाय।

जब श्रीमती रुक्मिणीदेवी का श्री अम्बिका के मन्दिर जाने का समय आ गया तो वह अनेक रक्षकों से घिर कर वहाँ गई। वहाँ पर देवी को प्रणाम करके रुक्मिणी ने प्रार्थना की कि पति-रूप में उन्हें श्रीकृष्ण प्राप्त हों। तत्पश्चात् वे अपनी एक दासी का हाथ पकड़ कर अम्बिका मन्दिर से बाहर आईं। उनकी अकथनीय सुन्दरता देखकर वहाँ पर उपस्थित बड़े बड़े वीरों ने अपने हथियार डाल दिये और पृथ्वी पर अचेत होकर धराशायी हो गये। रुक्मिणी बड़ी होशियारी से तब तक चलती गई जब तक उन्हें कृष्ण दिखाई नहीं पड़ गये। तब सबों के देखते देखते श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी को अपने रथ में चढ़ा लिया। जिस तरह सियारों के झुंड में से सिंह अपना उचित भाग ले लेता है उसी तरह उन्होंने सारे विरोध करने वाले राजाओं को पीछे हटाकर अपना तथा अपने संगियों का रास्ता धीरे-धीरे बना लिया। जरासन्ध तथा अन्य राजा अपनी पराजय तथा अनादर को न सह सकने के कारण अपने को जोर-जोर

से धिक्कारने लगे। इस अपयश को उन्होंने सिंह के भाग को एक क्षुद्र पशु द्वारा चुराये जाने के समान समझा।

श्रीशुक उवाच

वैदर्भ्याः स तु सन्देशं निशम्य यदुनन्दनः ।  
प्रगृह्य पाणिना पाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; वैदर्भ्याः—विदर्भ की राजकुमारी का; सः—वह; तु—तथा; सन्देशम्—गुप्त सन्देश; निशम्य—सुनकर; यदु-नन्दनः—यदुवंशी श्रीकृष्ण ने; प्रगृह्य—पकड़ कर; पाणिना—अपने हाथ से; पाणिम्—हाथ (ब्राह्मण-दूत का); प्रहसन्—मुसकाते हुए; इदम्—यह; अब्रवीत्—कहा।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : इस तरह कुमारी वैदर्भी का गुप्त सन्देश सुनकर यदुनन्दन ने ब्राह्मण का हाथ अपने हाथ में ले लिया और मुसकाते हुए उससे इस प्रकार बोले।

श्रीभगवानुवाच

तथाहमपि तच्चित्तो निद्रां च न लभे निशि ।  
वेदाहम्रुक्मिणा द्वेषान्ममोद्वाहो निवारितः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

श्री-भगवान् उवाच—भगवान् ने कहा; तथा—इसी तरह से; अहम्—मैं; अपि—भी; तत्—उस पर स्थिर किये; चित्तः—अपने मन को; निद्राम्—नींद; च—तथा; न लभे—नहीं पाता; निशि—रात में; वेद—जानता हूँ; अहम्—मैं; रुक्मिणा—रुक्मी द्वारा; द्वेषात्—शत्रुतावश; मम—मेरी; उद्वाहः—विवाह; निवारितः—रोका गया।

भगवान् ने कहा : जिस तरह रुक्मिणी का मन मुझ पर लगा है उसी तरह मेरा मन उस पर लगा है। मैं रात में सो तक नहीं सकता। मैं जानता हूँ कि द्वेषवश रुक्मी ने हमारा विवाह रोक दिया है।

तामानयिष्य उन्मथ्य राजन्यापसदान्मृधे ।  
मत्परामनवद्याङ्गीमेधसोऽग्निशिखामिव ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

ताम्—उसको; आनयिष्ये—मैं यहाँ लाऊँगा; उन्मथ्य—मथ कर; राजन्य—राजवर्ग के; अपसदान्—अयोग्य सदस्यों को; मृधे—युद्ध में; मत्—मेरे प्रति; पराम्—पूर्णतया समर्पित; अनवद्य—निर्विवाद; अङ्गीम्—शारीरिक सौन्दर्य वाली को; एधसः—अग्नि जलाने वाला काष्ठ; अग्नि—अग्नि की; शिखाम्—लपटों; इव—सदृश।

वह अपने आपको एकमात्र मेरे प्रति समर्पित कर चुकी है और उसका सौन्दर्य निष्कलंक है। मैं उन अयोग्य राजाओं को युद्ध में उसी तरह मथ कर उसे यहाँ लाऊँगा जिस तरह काठ से प्रज्वलित अग्नि उत्पन्न की जाती है।

**तात्पर्य :** जब काष्ठ में से प्रसुप्त अग्नि प्रकट की जाती है, तो लपटें निकलती हैं और इस क्रिया में काष्ठ जल जाता है। इसी तरह भगवान् ने निर्भय होकर भविष्यवाणी की कि, रुक्मिणी उनसे पाणिग्रहण करने के लिए आगे आयेगी और ऐसा होने पर दुष्ट राजागण कृष्ण की संकल्प-अग्नि में जल जायेंगे।

श्रीशुक उवाच

उद्वाहर्क्षं च विज्ञाय रुक्मिण्या मधुसूदनः ।  
रथः संयुज्यतामाशु दारुकेत्याह सारथिम् ॥ ४ ॥

**शब्दार्थ**

श्री-शुकः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; उद्वाह—विवाह की; ऋक्षम्—लग्न; च—तथा; विज्ञाय—जान कर; रुक्मिण्याः—रुक्मिणी के; मधुसूदनः—भगवान् कृष्ण ने; रथः—रथ; संयुज्यताम्—जोता जाय; आशु—तुरन्त; दारुक—हे दारुक; इति—इस प्रकार; आह—कहा; सारथिम्—अपने सारथी से।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : भगवान् मधुसूदन रुक्मिणी के विवाह की सही सही लग्न का समय भी समझ गये। अतः उन्होंने अपने सारथी से कहा, “हे दारुक, मेरा रथ तुरन्त तैयार करो।”

स चाश्वैः शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकैः ।  
युक्तं रथमुपानीय तस्थौ प्राञ्जलिरग्रतः ॥ ५ ॥

**शब्दार्थ**

सः—वह, दारुक; च—तथा; अश्वैः—घोड़ों से; शैब्य-सुग्रीव-मेघपुष्प-बलाहकैः—शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प तथा बलाहक नामक; युक्तम्—जोता; रथम्—रथ को; उपानीय—लाकर; तस्थौ—खड़ा हुआ; प्राञ्जलिः—आदरपूर्वक हाथ जोड़ कर; अग्रतः—सामने।

दारुक भगवान् का रथ ले आया जिसमें शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प तथा बलाहक नामक घोड़े जुते थे। फिर वह अपने हाथ जोड़ कर भगवान् कृष्ण के सामने खड़ा हो गया।

**तात्पर्य :** श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती *पद्म पुराण* से उद्धरण देते हैं जिसमें भगवान् कृष्ण के रथ के घोड़ों का वर्णन हुआ है—

शैब्यस्तु शुकपत्राभः सुग्रीवो हेमपिंगलः ।

मेघपुष्पस्तु मेघाभः पाण्डुरो च बलाहकः ॥

“शैब्य तोते के पंखों जैसे रंग वाला था, सुग्रीव पीला सुनहरा था, मेघपुष्प बादल के रंग का और बलाहक कुछ कुछ सफेद रंग का था।”

आरुह्य स्यन्दनं शौरिद्विजमारोप्य तूर्णगैः ।  
आनर्तादेकरात्रेण विदर्भानगमद्भयैः ॥ ६ ॥

### शब्दार्थ

आरुह्य—चढ़ कर; स्यन्दनम्—अपने रथ में; शौरिः—कृष्ण; द्विजम्—ब्राह्मण को; आरोप्य—बैठाकर; तूर्ण-गैः—तेज;  
आनर्तात्—आनर्त जिले से; एक—एकही; रात्रेण—रात में; विदर्भान्—विदर्भ राज्य तक; अगमत्—गये; हयैः—अपने घोड़ों  
से।

भगवान् शौरि अपने रथ में सवार हुए और फिर ब्राह्मण को चढ़ाया। तत्पश्चात् भगवान् के  
तेज घोड़े एक रात में ही उन्हें आनर्त जिले से विदर्भ ले गये।

राजा स कुण्डिनपतिः पुत्रस्नेहवशानुगः ।  
शिशुपालाय स्वां कन्यां दास्यन्कर्माण्यकारयत् ॥ ७ ॥

### शब्दार्थ

राजा—राजा; सः—वह, भीष्मक; कुण्डिन-पतिः—कुण्डिन का स्वामी; पुत्र—अपने पुत्र के; स्नेह—स्नेह के; वश—वशीभूत;  
अनुगः—आज्ञापालन करते हुए; शिशुपालाय—शिशुपाल को; स्वाम्—अपनी; कन्याम्—पुत्री; दास्यन्—देने ही वाला;  
कर्माणि—आवश्यक कार्य; अकारयत्—कर चुका था।

कुण्डिन का स्वामी राजा भीष्मक अपने पुत्र के स्नेह के वशीभूत होकर अपनी कन्या  
शिशुपाल को देने ही वाला था। राजा ने समस्त आवश्यक तैयारियाँ पूरी कर ली थीं।

तात्पर्य : इस सन्दर्भ में श्रील श्रीधर स्वामी इंगित करते हैं कि राजा भीष्मक को शिशुपाल से कोई  
विशेष लगाव न था प्रत्युत वह अपने पुत्र रुक्मी के प्रति अनुरागवश ऐसा कर रहा था।

पुरं सम्मृष्टसंसिक्तमार्गरथ्याचतुष्पथम् ।  
चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैः समलङ्कितम् ॥ ८ ॥  
स्रग्गन्धमाल्याभरणैर्विरजोऽम्बरभूषितैः ।  
जुष्टं स्त्रीपुरुषैः श्रीमद्गृहैरगुरुधूपितैः ॥ ९ ॥

### शब्दार्थ

पुरम्—नगरी को; सम्मृष्ट—अच्छी तरह साफ कराया; संसिक्त—तथा जल छिड़काया; मार्ग—मुख्य सड़कें; रथ्या—  
व्यावसायिक सड़कें; चतुः-पथम्—तथा चौराहों को; चित्र—रंगबिरंगे; ध्वज—झंडियों; पताकाभिः—पताकाओं से; तोरणैः—  
तथा गोल दरवाजों से; समलङ्कितम्—सजाया; स्रक्—रत्नजटित हारों से; गन्ध—सुगन्धित वस्तुएँ, यथा चन्दन-लेप; माल्य—  
फूल की मालाएँ; आभरणैः—तथा अन्य आभूषणों से; विरजः—स्वच्छ; अम्बर—वस्त्र से; भूषितैः—सजाये गये; जुष्टम्—  
युक्त; स्त्री—स्त्रियों; पुरुषैः—तथा पुरुषों से; श्री-मत्—ऐश्वर्यवान्; गृहैः—घरों से; अगुरु-धूपितैः—अगुरु धूप से सुगन्धित।

राजा ने मुख्य मार्गों, व्यापारिक सड़कों तथा चौराहों को ठीक से साफ कराया और तब उन  
पर जल छिड़काया। उसने विजय तोरणों तथा खंभों पर रंगबिरंगी झंडियों से नगर को

सजवाया। नगर के स्त्री-पुरुषों ने साफ-सुथरे वस्त्र पहने और अपने अपने शरीरों पर सुगन्धित चन्दन-लेप लगाया और बहुमूल्य हार, फूल की मालाएँ तथा रत्नजटित आभूषण धारण किये। उनके भव्य घर अगुरु की सुगन्ध से भर गये।

तात्पर्य : जब कच्ची सड़कों पर पानी का छिड़काव किया जाता है, तो धूल बैठ जाती है और सड़कें सुदृढ़ तथा चिकनी हो जाती हैं। राजा भीष्मक ने विवाह के लिए पूरी तैयारियाँ कीं और कृष्ण द्वारा सुन्दरी रुक्मिणीदेवी के अपहरण के लिए भूमिका तैयार कर दी।

पितृन्देवान्समभ्यर्च्य विप्रांश्च विधिवन्नृप ।

भोजयित्वा यथान्यायं वाचयामास मङ्गलम् ॥ १० ॥

#### शब्दार्थ

पितृन्—पूर्वजों; देवान्—देवतागण; समभ्यर्च्य—ठीक से पूजा की; विप्रांन्—ब्राह्मणों को; च—तथा; विधि-वत्—विधि-विधानों के अनुसार; नृप—हे राजा ( परीक्षित ); भोजयित्वा—भोजन कराकर; यथा—जिस तरह; न्यायम्—उचित है; वाचयाम्—आस—उच्चारित किया था; मङ्गलम्—शुभ मंत्र।

हे राजन्, महाराज भीष्मक ने पितरों, देवताओं तथा ब्राह्मणों को भलीभाँति भोजन कराकर उनकी विधिवत् पूजा की। तत्पश्चात् उसने दुलहन के मंगल के लिए परम्परागत मंत्रों का उच्चारण करवाया।

सुस्नातां सुदतीं कन्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ।

आहतांशुकयुग्मेन भूषितां भूषणोत्तमैः ॥ ११ ॥

#### शब्दार्थ

सु-स्नाताम्—ठीक से स्नान कराई गई; सु-दतीम्—सुन्दर दाँतों वाली; कन्याम्—दुलहन को; कृत—सम्पन्न करके; कौतुक-मङ्गलाम्—मांगलिक वैवाहिक हार पहनाने का उत्सव; आहत—कोरा; अंशुक—वस्त्र की; युग्मेन—जोड़ी से; भूषिताम्—अलंकृत; भूषण—गहनों से; उत्तमैः—सुन्दर सुन्दर।

दुलहन ने अपने दाँत साफ किये और फिर स्नान किया और इसके बाद उसने मांगलिक वैवाहिक हार धारण किया। तत्पश्चात् उसे उत्तम कोटि के नये वस्त्रों की जोड़ी पहनाई गई और अत्यन्त सुन्दर रत्नजटित गहनों से सजाया गया।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती के अनुसार मांगलिक उत्सवों पर केवल साफ-सुथरे कोरे वस्त्र धारण किये जाने चाहिए।

चक्रुः सामर्ग्यजुर्मन्त्रैर्वध्वा रक्षां द्विजोत्तमाः ।  
पुरोहितोऽथर्वविद्वै जुहाव ग्रहशान्तये ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

चक्रुः—किया; साम-ऋग्-यजुः—साम, ऋग तथा यजुर्वेदों के; मन्त्रैः—मंत्रों से; वध्वाः—दुलहन या वधू की; रक्षाम्—रक्षा;  
द्विज-उत्तमः—उत्तम ब्राह्मण; पुरोहितः—पुरोहित; अथर्व-वित्—अथर्ववेद के मंत्रों में पटु; वै—निस्सन्देह; जुहाव—घी की  
आहुति डाली; ग्रह—नियन्ता ग्रहों को; शान्तये—शान्त करने के लिए।

उत्तमोत्तम ब्राह्मणजनों ने वधू की रक्षा के लिए ऋग्, साम तथा यजुर्वेदों के मंत्रों का उच्चारण किया और अथर्ववेद में पटु पुरोहित ने नियन्ता ग्रहों को शान्त करने के लिए आहुतियाँ दीं।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती इंगित करते हैं कि अथर्ववेद प्रायः प्रतिकूल ग्रहों की शान्ति से सम्बन्धित है।

हिरण्यरूप्य वासांसि तिलांश्च गुडमिश्रितान् ।  
प्रादाद्धेनूश्च विप्रेभ्यो राजा विधिविदां वरः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

हिरण्य—सोना; रूप्य—चाँदी; वासांसि—तथा वस्त्र; तिलान्—तिल; च—तथा; गुड—गुड़; मिश्रितान्—से मिश्रित;  
प्रादात्—दिया; धेनूः—गौवें; च—भी; विप्रेभ्यः—ब्राह्मणों को; राजा—राजा भीष्मक ने; विधि—विधि-विधान; विदाम्—  
जानने वालों में; वरः—श्रेष्ठ।

राजा ने विधि-विधानों के ज्ञान में दक्ष व अद्वितीय ब्राह्मणों को सोना, चाँदी, वस्त्र, गौवें तथा गुड़-मिश्रित तिलों की दक्षिणा दी।

एवं चेदिपती राजा दमघोषः सुताय वै ।  
कारयामास मन्त्रज्ञैः सर्वमभ्युदयोचितम् ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; चेदि-पतिः—चेदि का राजा; राजा दमघोषः—राजा दमघोष ने; सुताय—अपने पुत्र ( शिशुपाल ) के लिए;  
वै—निस्सन्देह; कारयाम् आस—कराया था; मन्त्र-ज्ञैः—मंत्र जानने वालों के द्वारा; सर्वम्—सबकुछ; अभ्युदय—उसके उत्थान  
के लिए; उचितम्—उपयुक्त।

चेदि नरेश राजा दमघोष ने भी अपने पुत्र की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए समस्त कृत्यों को सम्पन्न करने के लिए मंत्रोच्चार में पटु ब्राह्मणों को लगाया था।

मदच्युद्धिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हेममालिभिः ।  
पत्न्यश्वसङ्कुलैः सैन्यैः परीतः कुण्डीनं ययौ ॥ १५ ॥

## शब्दार्थ

मद—मस्तक से चूने वाला द्रव; च्युद्धिः—चूता हुआ; गज—हाथियों के; अनीकैः—समूह से; स्यन्दनैः—रथों के साथ; हेम—सुनहला; मालिभिः—मालाओं से सुसज्जित; पत्ति—पैदल सैनिकों; अश्व—तथा घोड़ों सहित; सङ्कुलैः—एकत्रित; सैन्यैः—सेनाओं द्वारा; परीतः—साथ साथ; कुण्डिनम्—भीष्मक की राजधानी कुण्डिन में; ययौ—गया।

राजा दमघोष ने मद टपकाते हाथियों, लटकती सुनहरी साँकलों वाले रथों तथा असंख्य घुड़सवार और पैदल सैनिकों के साथ कुण्डिन की यात्रा की।

तं वै विदर्भाधिपतिः समभ्येत्याभिपूज्य च ।

निवेशयामास मुदा कल्पितान्यनिवेशने ॥ १६ ॥

## शब्दार्थ

तम्—उस ( दमघोष ) को; वै—दरअसल; विदर्भ-अधिपतिः—विदर्भ के स्वामी भीष्मक ने; समभ्येत्य—बढ़कर अगवानी करके; अभिपूज्य—आदर करके; च—तथा; निवेशयाम् आस—ठहराया; मुदा—हर्षपूर्वक; कल्पित—बनवाया; अन्य—विशेष; निवेशने—जनवासे में।

विदर्भराज भीष्मक नगर से बाहर गये और राजा दमघोष से विशेष सत्कार के प्रतीकों के साथ मिले। फिर भीष्मक ने दमघोष को इस अवसर के लिए विशेष रूप से निर्मित आवास-ग्रह में ठहराया।

तत्र शाल्वो जरासन्धो दन्तवक्रो विदूरथः ।

आजग्मुश्चैद्यपक्षीयाः पौण्ड्रकाद्याः सहस्रशः ॥ १७ ॥

## शब्दार्थ

तत्र—वहाँ; शाल्वः जरासन्धः दन्तवक्रः विदूरथः—शाल्व, जरासन्ध, दन्तवक्र तथा विदूरथ; आजग्मुः—आये; चैद्य—शिशुपाल के; पक्षीयाः—पक्षधर; पौण्ड्रक—पौण्ड्रक; आद्याः—इत्यादि; सहस्रशः—हजारों।

शाल्व, जरासन्ध, दन्तवक्र तथा विदूरथ जो शिशुपाल के समर्थक थे, वे सभी पौण्ड्रक तथा हजारों अन्य राजाओं के साथ आये।

तात्पर्य : भगवान् कृष्ण के जीवन के इतिहास से परिचित लोग इस श्लोक में दिये सभी नामों को झटपट पहचान लेंगे। यहाँ पर उल्लिखित सारे राजा श्रीकृष्ण से कटु शत्रुता रखते थे और किसी न किसी रूप में उनका विरोध करते थे। किन्तु शिशुपाल के इस प्रस्तावित विवाह के अवसर पर इन सबों को पराजित और निराश होना होगा।

कृष्णरामद्विषो यत्ताः कन्यां चैद्याय साधितुम् ।

यद्यागत्य हरेत्कृष्णो रामाद्यैर्यदुभिर्वृतः ॥ १८ ॥

योत्स्यामः संहतास्तेन इति निश्चितमानसाः ।

आजग्मुर्भूभुजः सर्वे समग्रबलवाहनाः ॥ १९ ॥

#### शब्दार्थ

कृष्ण-राम-द्वेषः—कृष्ण तथा बलराम से द्वेष करने वालों ने; यत्ताः—तैयारी की; कन्याम्—दुलहन को; चैद्याय—शिशुपाल के लिए; साधितुम्—प्राप्त करने के लिए; यदि—यदि; आगत्य—आकर; हरेत्—हरण कर ली जाय; कृष्णः—कृष्ण; राम—बलराम; आद्यैः—इत्यादि के द्वारा; यदुभिः—यादवों के; वृतः—साथ में; योत्स्यामः—हम युद्ध करेंगे; संहताः—साथ होकर; तेन—उसके साथ; इति—इस प्रकार; निश्चित-मानसाः—कृतसंकल्प; आजग्मुः—आये; भू-भुजः—राजा; सर्वे—सभी; समग्र—पूर्ण; बल—सैन्य-शक्ति; वाहनाः—तथा वाहनों के साथ ।

शिशुपाल को दुलहन दिलाने के लिए कृष्ण तथा बलराम से ईर्ष्या करने वाले राजाओं ने परस्पर यह निश्चय किया, “यह कृष्ण यदि बलराम तथा अन्य यदुओं के साथ दुलहन का अपहरण करने यहाँ आता है, तो हम सब मिलकर उससे युद्ध करेंगे।” अतः वे ईर्ष्यालु राजा अपनी सारी सेनाएँ तथा सारे सैन्य वाहन लेकर विवाह में गये ।

तात्पर्य : संहताः का सामान्य अर्थ “दृढ़ता से बँधा हुआ” होता है किन्तु इसका अर्थ “पूरी तरह पददलित या मारा गया” भी हो सकता है। इस तरह यद्यपि कृष्ण के शत्रु एकजुट और बलशाली—संहताः पहले अर्थ में—थे किन्तु वे भगवान् का ठीक से मुकाबला नहीं कर पाये अतः वे पददलित होकर मारे जायेंगे—संहताः दूसरे अर्थ में ।

श्रुत्वैतद्भगवान्नामो विपक्षीय नृपोद्यमम् ।

कृष्णां चैकं गतं हर्तुं कन्यां कलहशङ्कितः ॥ २० ॥

बलेन महता सार्धं भ्रातृस्नेहपरिप्लुतः ।

त्वरितः कुण्डिनं प्रागाद्गजाश्वरथपत्तिभिः ॥ २१ ॥

#### शब्दार्थ

श्रुत्वा—सुनकर; एतत्—यह; भगवान् रामः—बलराम; विपक्षीय—शत्रुपक्ष के; नृप—राजाओं की; उद्यमम्—तैयारियाँ; कृष्णाम्—कृष्ण को; च—तथा; एकम्—अकेला; गतम्—गया हुआ; हर्तुम्—हरण करने के लिए; कन्याम्—कन्या को; कलह—युद्ध की; शङ्कितः—आशंका से; बलेन—सेना; महता—विशाल; सार्धम्—साथ; भ्रातृ—अपने भाई के प्रति; स्नेह—स्नेह में; परिप्लुतः—निमग्न; त्वरितः—तुरन्त; कुण्डिनम्—कुण्डिन को; प्रागात्—गये; गज—हाथी; अश्व—घोड़े; रथ—रथ; पत्तिभिः—पैदल सेना सहित ।

जब बलराम ने विपक्षी राजाओं की इन तैयारियों तथा कृष्ण द्वारा दुलहन का हरण करने के लिए अकेले ही प्रस्थान किये जाने के बारे में सुना तो उन्हें शंका होने लगी कि कहीं युद्ध न ठन जाय। अतः वे अपने भाई के स्नेह में निमग्न होकर अपनी विशाल सेना के साथ तेजी से कुण्डिन के लिए कूच कर गये। उनकी सेना में पैदल तथा हाथी, घोड़े और रथ पर सवार सैनिक थे।

भीष्मकन्या वरारोहा काङ्क्षन्त्यागमनं हरेः ।

प्रत्यापत्तिमपश्यन्ती द्विजस्याचिन्तयत्तदा ॥ २२ ॥

**शब्दार्थ**

भीष्म-कन्या—भीष्मक-पुत्री ने; वर-आरोहा—सुन्दर नितम्बों वाली; काङ्क्षन्ती—प्रतीक्षा करती; आगमनम्—आने की; हरेः—कृष्ण के; प्रत्यापत्तिम्—वापसी; अपश्यन्ती—न देखती हुई; द्विजस्य—ब्राह्मण की; अचिन्तयत्—सोचा; तदा—तब।

भीष्मक की सुप्रिया पुत्री कृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकतापूर्वक कर रही थी किन्तु

जब उसने ब्राह्मण को वापस आए हुए नहीं देखा तो उसने इस प्रकार सोचा।

अहो त्रियामान्तरित उद्वाहो मेऽल्पराधसः ।

नागच्छत्यरविन्दाक्षो नाहं वेद्म्यत्र कारणम् ।

सोऽपि नावर्ततेऽद्यापि मत्सन्देशहरो द्विजः ॥ २३ ॥

**शब्दार्थ**

अहो—हाय; त्रि-याम—तीन पहर ( नौ घंटे ) अर्थात् पूरी रात; अन्तरितः—बीत चुकी; उद्वाहः—विवाह; मे—मेरा; अल्प—अपर्याप्त; राधसः—सौभाग्य; न आगच्छति—नहीं आता है; अरविन्द-अक्षः—कमल-नेत्रों वाले कृष्ण; न—नहीं; अहम्—मैं; वेद्मि—जानती हूँ; अत्र—इस; कारणम्—कारण के लिए; सः—वह; अपि—भी; न आवर्तते—नहीं लौटा है; अद्य अपि—अब भी; मत्—मेरे; सन्देश—सन्देश का; हरः—ले जाने वाला; द्विजः—ब्राह्मण।

[ राजकुमारी रुक्मिणी ने सोचा ] : हाय! रात बीत जाने पर मेरा विवाह होना है! मैं कितनी

अभागिनी हूँ! कमल-नेत्र कृष्ण अभी भी नहीं आये। मैं नहीं जानती क्यों? यहाँ तक कि

ब्राह्मण-दूत भी अभी तक नहीं लौटा।

तात्पर्य : जैसाकि श्लोक से प्रकट है और जैसाकि श्रील श्रीधर स्वामी द्वारा पुष्टि हुई है वर्तमान घटना सूर्योदय के पूर्व घटती है।

अपि मय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वा किञ्चिज्जुगुप्सितम् ।

मत्पाणिग्रहणे नूनं नायाति हि कृतोद्यमः ॥ २४ ॥

**शब्दार्थ**

अपि—शायद; मयि—मुझमें; अनवद्य—निर्दोष; आत्मा—मन तथा शरीर वाला; दृष्ट्वा—देखकर; किञ्चित्—कुछ कुछ; जुगुप्सितम्—घृणित; मत्—मेरा; पाणि—हाथ; ग्रहणे—ग्रहण करने के लिए; नूनम्—निस्सन्देह; न आयाति—नहीं आया है; हि—निश्चय ही; कृत-उद्यमः—पहले ऐसा चाहते हुए भी।

लगता है कि निर्दोष प्रभु ने यहाँ आने के लिए तैयार होते समय भी मुझमें कुछ घृणित बात

देखी हो, जिससे वे मेरा पाणिग्रहण करने नहीं आये।

तात्पर्य : राजकुमारी रुक्मिणी ने निर्भीक होकर कृष्ण को अपना अपहरण करने के लिए आमंत्रित किया था। जब रुक्मिणी ने देखा कि वे नहीं आये तो वह भयभीत हुई कि शायद उन्होंने उसका प्रस्ताव

टुकरा दिया क्योंकि हो सकता है कि उसमें कोई अग्राह्य दोष दिखा हो। जैसाकि यहाँ व्यक्त हुआ है, भगवान् *अनवद्य* अर्थात् निर्दोष हैं अतः यदि उन्हें रुक्मिणी में कोई दोष दिखा हो तो वह उनके लिए अयोग्य दुलहन सिद्ध होगी। उस युवती राजकुमारी के लिए ऐसी चिन्ता करना स्वाभाविक था। यही नहीं, यदि श्रीकृष्ण ने सचमुच ऐसा निर्णय कर लिया है, तो ब्राह्मण के लिए स्वाभाविक होगा कि रुक्मिणी की प्रतिक्रिया के विषय में भयभीत हो यदि वह ऐसा समाचार उन तक लाता।

दुर्भगाया न मे धाता नानुकूलो महेश्वरः ।

देवी वा विमुखी गौरी रुद्राणी गिरिजा सती ॥ २५ ॥

#### शब्दार्थ

दुर्भगाया:—अभागी; न—नहीं; मे—मुझ पर; धाता—स्रष्टा ( ब्रह्मा )विधाता; न—नहीं; अनुकूलः—अनुकूल; महा-ईश्वरः—शिवजी; देवी—देवी ( उनकी प्रिया ); वा—अथवा; विमुखी—विरुद्ध; गौरी—गौरी; रुद्राणी—रुद्र की पत्नी; गिरि-जा—हिमालय की पुत्री; सती—सती, जो पूर्वजन्म में दक्ष पुत्री थी और जिसने अपना शरीर-त्याग किया था।

मैं घोर अभागिनी हूँ क्योंकि न तो स्रष्टा विधाता मेरे अनुकूल है, न ही महेश्वर ( शिवजी )

अथवा शायद शिव-पत्नी देवी जो गौरी, रुद्राणी, गिरिजा तथा सती नाम से विख्यात हैं, मेरे विपरीत हो गई हैं।

**तात्पर्य :** श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती बतलाते हैं कि हो सकता है रुक्मिणी ने सोचा हो, “यदि कृष्ण आना भी चाह रहे हों तो सम्भवतः रास्ते में स्रष्टा ब्रह्मा ने रोक लिया हो क्योंकि वे मेरे अनुकूल नहीं हैं। लेकिन वे प्रतिकूल क्यों होने लगे? शायद ये महेश्वर शिवजी हों जिनकी मैंने कुछ अवसरों पर ठीक से पूजा नहीं की जिससे वे क्रुद्ध हो गए हों। लेकिन वे तो महेश्वर हैं—महान् नियंता—अतः वे मुझ जैसी क्षुद्र और बेसमझ लड़की से क्यों क्रुद्ध होने लगे?

शायद यह शिव-पत्नी गौरीदेवी हैं, जो मुझ पर अप्रसन्न हैं यद्यपि मैं नित्य ही उनकी पूजा करती रही हूँ। हाय! मैंने उनका किस तरह अपमान किया है कि वे मुझसे रूठ गई हैं? किन्तु वे ठहरी रुद्राणी जिसका अर्थ है ‘हरएक को रूलाने वाली।’ अतः शायद वे और शिवजी मुझे रूलाना चाहते हैं। किन्तु यह देखते हुए कि मैं कितनी दुखियारी हूँ और अपना प्राण त्यागने वाली हूँ वे मुझ पर दयालु क्यों नहीं होते? इसका कारण यही हो सकता है कि वे गिरिजा हैं, गोद ली हुई पुत्री हैं, तो फिर वे दयालु क्यों होने लगीं? उन्होंने अपने सती अवतार में अपना शरीर छोड़ा था, अतएव वे शायद यही चाहती हैं कि मैं भी अपना शरीर छोड़ दूँ।”

इस तरह आचार्य ने काव्य-संवेदनशीलता की अनुभूति के साथ इस श्लोक में विविध नामों की व्याख्या की है।

एवं चिन्तयती बाला गोविन्दहृतमानसा ।  
न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रे चाश्रुकलाकुले ॥ २६ ॥

#### शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; चिन्तयती—सोचती हुई; बाला—युवती; गोविन्द—कृष्ण द्वारा; हृत—चुराया हुआ; मानसा—मन से; न्यमीलयत—बन्द कर लिया; काल—समय; ज्ञा—जानने वाली; नेत्रे—अपनी आँखें; च—तथा; अश्रु-कला—आँसू से; आकुले—डबडबाये।

इस तरह से सोच रही तरुण बाला ने, जिसका मन कृष्ण ने चुरा लिया था, यह सोचकर कि अब भी समय है, अपने अश्रुपूरित नेत्र बन्द कर लिये।

तात्पर्य : श्रील श्रीधर स्वामी ने कालज्ञा शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है : “ [रुक्मिणी ने सोचा] : यह गोविन्द के आने का सही समय भी नहीं है।” और इस तरह उसे कुछ ढाढ़स बँधा।

एवं वध्वाः प्रतीक्षन्त्या गोविन्दागमनं नृप ।  
वाम ऊरुर्भुजो नेत्रमस्फुरन्प्रियभाषिणः ॥ २७ ॥

#### शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; वध्वाः—बधु, दुलहन; प्रतीक्षन्त्याः—प्रतीक्षारत; गोविन्द-आगमनम्—कृष्ण का आगमन; नृप—हे राजा ( परीक्षित ); वामः—बाईं; ऊरुः—जाँघ; भुजः—बाँह; नेत्रम्—तथा आँख; अस्फुरन्—फड़कने लगी; प्रिय—वांछित; भाषिणः—बताती हुई।

हे राजन्, जब वह दुलहन गोविन्द के आगमन की इस तरह प्रतीक्षा कर रही थी तो उसे लगा कि उसकी बाईं जाँघ, बाईं भुजा तथा बाईं आँख फड़क रही हैं। यह इसका संकेत था कि कुछ प्रिय घटना घटने वाली है।

अथ कृष्णविनिर्दिष्टः स एव द्विजसत्तमः ।  
अन्तःपुरचरीं देवीं राजपुत्रीमददर्श ह ॥ २८ ॥

#### शब्दार्थ

अथ—तत्पश्चात्; कृष्ण-विनिर्दिष्टः—कृष्ण द्वारा आदेश दिया गया; सः—वह; एव—ही; द्विज—विद्वान ब्राह्मण; सत्-तमः—परम शुद्ध; अन्तः-पुर—भीतरी महल में; चरीम्—ठहरी हुई; देवीम्—देवी रुक्मिणी को; राज—राजा की; पुत्रीम्—पुत्री को; ददर्श ह—देखा।

तभी वह शुद्धतम विद्वान ब्राह्मण, कृष्ण के आदेशानुसार दिव्य राजकुमारी रुक्मिणी से भेंट करने राजमहल के अन्तःपुर में आया।

तात्पर्य : श्रील श्रीधर स्वामी के अनुसार श्रीकृष्ण नगर के बाहर उद्यान में आ चुके थे और रुक्मिणी की चिन्ता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ब्राह्मण को बताया था कि वह जाकर उनके आगमन का समाचार दे।

सा तं प्रहृष्टवदनमव्यग्रात्मगतिं सती ।

आलक्ष्य लक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता ॥ २९ ॥

#### शब्दार्थ

स—वह; तम्—उसको; प्रहृष्ट—प्रसन्न; वदनम्—मुख वाला; अव्यग्र—व्यग्रतारहित; आत्म—जिसके शरीर की; गतिम्—चाल; सती—साध्वी तरुणी; आलक्ष्य—देखकर; लक्षण—लक्षणों की; अभिज्ञा—जानने वाली; समपृच्छत्—पूछा; शुचि—शुद्ध; स्मिता—मुसकान सहित।

ब्राह्मण के प्रसन्न मुख तथा शान्त चाल को देखकर ऐसे लक्षणों की दक्ष-व्याख्या करने वाली साध्वी रुक्मिणी ने शुद्ध मन्द-हास के साथ उससे पूछा।

तस्या आवेदयत्प्राप्तं शशंस यदुनन्दनम् ।

उक्तं च सत्यवचनमात्मोपनयनं प्रति ॥ ३० ॥

#### शब्दार्थ

तस्याः—उससे; आवेदयत्—सूचना दी; प्राप्तम्—आकर; शशंस—बतलाया; यदु-नन्दनम्—यदुओं के पुत्र कृष्ण ने; उक्तम्—जो कहा था; च—तथा; सत्य—आश्वासन के; वचनम्—शब्द; आत्म—उसके साथ; उपनयनम्—विवाह के; प्रति—विषय में।

ब्राह्मण ने उनसे यदुनन्दन के आगमन की सूचना सुनाई और उनके साथ विवाह करने के भगवान् के वचन को कह सुनाया।

तमागतं समाज्ञाय वैदर्भी हृष्टमानसा ।

न पश्यन्ती ब्राह्मणाय प्रियमन्यन्ननाम सा ॥ ३१ ॥

#### शब्दार्थ

तम्—उसको, कृष्ण को; आगतम्—आया हुआ; समाज्ञाय—अच्छी तरह समझकर; वैदर्भी—रुक्मिणी; हृष्ट—प्रफुल्लित; मानसा—मन वाली; न पश्यन्ती—न देखती हुई; ब्राह्मणाय—ब्राह्मण को; प्रियम्—प्रिय; अन्यत्—कुछ और; ननाम—नमस्कार किया; सा—उसने।

राजकुमारी वैदर्भी कृष्ण का आगमन सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हुई। पास में देने योग्य कोई उपयुक्त वस्तु न पाकर उसने ब्राह्मण को केवल नमस्कार किया।

प्राप्तौ श्रुत्वा स्वदुहितुरुद्वाहप्रेक्षणोत्सुकौ ।

अभ्ययान्तूर्यघोषेण रामकृष्णौ समर्हणैः ॥ ३२ ॥

## शब्दार्थ

प्राप्तौ—आया हुआ; श्रुत्वा—सुनकर; स्व—अपनी ( मेरी ); दुहितुः—पुत्री का; उद्वाह—विवाह; प्रेक्षण—देखने के लिए; उत्सुकौ—उत्सुक; अभ्ययात्—आगे आया; तूर्य—बाजे; घोषेण.—शब्द से; राम-कृष्णौ—बलराम तथा कृष्ण के पास; समर्हणैः—पर्याप्त भेंटों सहित ।

जब राजा ने सुना कि कृष्ण तथा बलराम आये हैं और वह उसकी पुत्री का विवाह देखने के लिए उत्सुक हैं, तो वह बाजे-गाजे के साथ उनका सत्कार करने के लिए पर्याप्त भेंटें लेकर आगे बढ़ा ।

मधुपर्कमुपानीय वासांसि विरजांसि सः ।

उपायनान्यभीष्टानि विधिवत्समपूजयत् ॥ ३३ ॥

## शब्दार्थ

मधु-पर्कम्—दूध तथा शहद का मिश्रण; उपानीय—लेकर; वासांसि—वस्त्र; विरजांसि—स्वच्छ; सः—उसने; उपायनानि—भेंटें; अभीष्टानि—वांछित; विधि-वत्—शास्त्रीय विधियों के अनुसार; समपूजयत्—पूजा की ।

उन्हें मधुपर्क, नये वस्त्र तथा अन्य वांछित भेंटें देकर उसने निर्धारित विधियों के अनुसार उनकी पूजा की ।

तयोर्निवेशनं श्रीमदुपाकल्प्य महामतिः ।

ससैन्ययोः सानुगयोरतिथ्यं विदधे यथा ॥ ३४ ॥

## शब्दार्थ

तयोः—दोनों के लिए; निवेशनम्—ठहरने का स्थान; श्री-मत्—ऐश्वर्यशाली, भव्य; उपाकल्प्य—व्यवस्था करके; महामतिः—उदार; स—सहित; सैन्ययोः—उनके सैनिकों; स—सहित; अनुगयोः—उनके निजी संगियों; आतिथ्यम्—सत्कार; विदधे—किया; यथा—उचित रीति से ।

उदार राजा ने दोनों प्रभुओं के लिए तथा उनकी सेना एवं उनके संगियों के लिए भव्य आवासों की व्यवस्था की । इस तरह उसने उनको समुचित आतिथ्य प्रदान किया ।

एवं राज्ञां समेतानां यथावीर्यं यथावयः ।

यथाबलं यथावित्तं सर्वैः कामैः समर्हयत् ॥ ३५ ॥

## शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; राज्ञाम्—राजाओं के लिए; समेतानाम्—एकत्र हुए; यथा—के अनुसार; वीर्यम्—उनके पराक्रम; यथा—के अनुसार; वयः—उनकी आयु; यथा—के अनुसार; बलम्—उनकी शक्ति; यथा—के अनुसार; वित्तम्—उनकी सम्पत्ति; सर्वैः—समस्त; कामैः—इच्छित वस्तुओं से; समर्हयत्—उनका आदर किया ।

इस तरह भीष्मक ने इस अवसर पर एकत्र हुए राजाओं को सारी वांछित वस्तुएँ प्रदान कीं और उनकी राजनैतिक शक्ति, आयु, शारीरिक बल तथा सम्पत्ति के अनुसार उनका सम्मान

किया।

कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुरवासिनः ।

आगत्य नेत्राञ्जलिभिः पपुस्तन्मुखपङ्कजम् ॥ ३६ ॥

#### शब्दार्थ

कृष्णम्—कृष्ण को; आगतम्—आया हुआ; आकर्ण्य—सुनकर; विदर्भ-पुर—विदर्भ की राजधानी के; वासिनः—निवासी; आगत्य—आकर; नेत्र—अपनी आँखों की; अञ्जलिभिः—अंजुलियों से; पपुः—पिया; तत्—उसका; मुख—मुँह; पङ्कजम्—कमल।

जब विदर्भवासियों ने सुना कि भगवान् कृष्ण आए हैं, तो वे सब उनका दर्शन करने गये।

अपनी आँखों की अंजुली से उन्होंने उनके कमलमुख के मधु का पान किया।

अस्यैव भार्या भवितुं रुक्मिण्यर्हति नापरा ।

असावप्यनवद्यात्मा भैष्याः समुचितः पतिः ॥ ३७ ॥

#### शब्दार्थ

अस्य—उसकी; एव—एकमात्र; भार्या—पत्नी; भवितुम्—होने के लिए; रुक्मिणी—रुक्मिणी; अर्हति—पात्र है; न अपरा—कोई दूसरी नहीं; असौ—वह; अपि—भी; अनवद्य—निर्दोष; आत्मा—स्वरूप; भैष्याः—भीष्मक की पुत्री के लिए; समुचितः—उपयुक्त; पतिः—पति।

[ नगरवासियों ने कहा ] एकमात्र रुक्मिणी उनकी पत्नी बनने के योग्य हैं और वे भी

दोषरहित सौन्दर्यवान होने से राजकुमारी भीष्मी के लिए एकमात्र उपयुक्त पति हैं।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती के अनुसार इस श्लोक में विभिन्न नागरिकों के कथन सम्मिलित हैं। कुछ लोगों ने संकेत किया कि रुक्मिणी कृष्ण के लिए उपयुक्त पत्नी है, दूसरों ने कहा कि उनके सिवाय अन्य कोई इसके योग्य नहीं है। इसी प्रकार कुछेक ने कहा कि कृष्ण रुक्मिणी के सर्वाधिक योग्य पति हैं और अन्यो ने कहा कि उनके अतिरिक्त अन्य कोई योग्य पति है ही नहीं।

किञ्चित्सुचरितं यन्नस्तेन तुष्टस्त्रिलोककृत् ।

अनुगृह्णातु गृह्णातु वैदर्भ्याः पाणिमच्युतः ॥ ३८ ॥

#### शब्दार्थ

किञ्चित्—तनिक भी; सु-चरितम्—पुण्य कर्म; यत्—जो भी; नः—हमारे; तेन—उसी से; तुष्टः—संतुष्ट; त्रि-लोक—तीनों लोक का; कृत्—स्रष्टा, विधाता; अनुगृह्णातु—दया दिखलाये; गृह्णातु—जिससे ग्रहण करे; वैदर्भ्याः—रुक्मिणी का; पाणिम्—हाथ; अच्युतः—कृष्ण।

हम लोगों ने जो भी पुण्य कर्म किये हों उनसे तीनों लोकों के स्रष्टा अच्युत प्रसन्न हों और वे

वैदर्भी का पाणिग्रहण करने की अनुकम्पा दिखलायें।

तात्पर्य : विदर्भ के भक्त नागरिकों ने प्रेमवश अपने समस्त संचित पुण्य राजकुमारी रुक्मिणी को अर्पित कर दिये। वे भगवान् कृष्ण के साथ उनका विवाह देखने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे।

एवं प्रेमकलाबद्धा वदन्ति स्म पुरौकसः ।  
कन्या चान्तःपुरात्प्रागाद्भटैर्गुप्ताम्बिकालयम् ॥ ३९ ॥

#### शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; प्रेम—शुद्ध प्रेम की; कला—वृद्धि से; बद्धा:—बँधे हुए; वदन्ति स्म—बोल रहे थे; पुर-ओकसः—नगरनिवासी; कन्या—दुलहन; च—तथा; अन्तः-पुरात्—अन्तःपुर से; प्रागात्—बाहर गई; भटैः—अंगरक्षकों द्वारा; गुप्ता—रक्षित; अम्बिका-आलयम्—देवी अम्बिका के मन्दिर तक।

अपने उमड़ते प्रेम से बँध कर नगर के निवासी इस तरह की बातें कर रहे थे। तभी अंगरक्षकों से संरक्षित दुलहन अम्बिका के मन्दिर में जाने के लिए अंतःपुर से बाहर आई।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ने कला की परिभाषा मेदिनी कोश से उद्धृत की है, जो इस प्रकार है—कला मूले प्रवृद्धौ स्याच्छिलादावंशमात्रके—कला शब्द के अर्थ हैं—जड़, वृद्धि, पत्थर या केवल अंश।

पद्भ्यां विनिर्ययौ द्रष्टुं भवान्याः पादपल्लवम् ।  
सा चानुध्यायती सम्यङ्मुकुन्दचरणाम्बुजम् ।  
यतवाङ्मातृभिः सार्धं सखीभिः परिवारिता ॥ ४० ॥  
गुप्ता राजभटैः शूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ।  
मृदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्च जघ्निरे ॥ ४१ ॥

#### शब्दार्थ

पद्भ्याम्—पैदल; विनिर्ययौ—बाहर गई; द्रष्टुम्—देखने के लिए; भवान्याः—माता भवानी के; पाद-पल्लवम्—कमल की पंखड़ियों जैसे चरण; सा—वह; च—तथा; अनुध्यायती—ध्यान करती हुई; सम्यक्—पूर्णतः; मुकुन्द—कृष्ण के; चरण-अम्बुजम्—चरणकमलों पर; यत-वाक्—मौन धारण किये; मातृभिः—अपनी माताओं के; सार्धम्—साथ; सखीभिः—सखियों से; परिवारिता—घिरी; गुप्ता—रक्षित; राज—राजा के; भटैः—अंगरक्षकों द्वारा; शूरैः—बहादुर; सन्नद्धैः—सशस्त्र तथा तत्पर; उद्यत—उठे हुए; आयुधैः—हथियारों से; मृदङ्ग-शङ्ख-पणवाः—मृदंग, शंख तथा ढोल; तूर्य—तुरही; भेर्यः—भेरी, सींग का बाजा; च—तथा; जघ्निरे—बज रहे थे।

रुक्मिणी मौन होकर देवी भवानी के चरणकमलों का दर्शन करने के लिए पैदल ही चल पड़ी। उनके साथ माताएँ तथा सखियाँ थीं और वे राजा के बहादुर सैनिकों द्वारा संरक्षित थीं जो अपने हथियार ऊपर उठाये हुए सन्नद्ध थे। रुक्मिणी केवल कृष्ण के चरणकमलों में अपने मन को ध्यानस्थ किये थीं। मार्ग-भर में मृदंग, शंख, पणव, तुरही तथा अन्य बाजे बजाये जा रहे थे।

नानोपहार बलिभिर्वारमुख्याः सहस्रशः ।  
 स्रग्गन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यः स्वलङ्कृताः ॥ ४२ ॥  
 गायन्त्यश्च स्तुवन्तश्च गायका वाद्यवादकाः ।  
 परिवार्य वधूं जग्मुः सूतमागधवन्दिनः ॥ ४३ ॥

**शब्दार्थ**

नाना—विविध; उपहार—पूजा-सामग्री; बलिभिः—तथा भेंटों सहित; वार-मुख्याः—प्रमुख गणिकाएँ; सहस्रशः—हजार; स्रक्—फूल की मालाओं; गन्ध—सुगन्धियों; वस्त्र—वस्त्र; आभरणैः—तथा आभूषणों से; द्विज—ब्राह्मणों की; पत्न्यः—पत्नियाँ; स्व-अलङ्कृताः—भलीभाँति आभूषित; गायन्त्यः—गाती हुई; च—तथा; स्तुवन्तः—स्तुतियाँ करतीं; च—तथा; गायकाः—गवैये; वाद्य-वादकाः—बाजे बजाने वाले; परिवार्य—साथ होकर; वधूं—दुलहन के; जग्मुः—गये; सूत—सूत; मागध—मागध; वन्दिनः—तथा वन्दीजन।

दुलहन के पीछे पीछे हजारों प्रमुख गणिकाएँ थीं जो नाना प्रकार की भेंटें लिये थीं। उनके साथ ब्राह्मणों की सजी-धजी पत्नियाँ गीत गा रही थीं और स्तुतियाँ कर रही थीं। वे माला, सुगन्ध, वस्त्र तथा आभूषण की भेंटें लिये थीं। साथ ही पेशेवर गवैये, संगीतज्ञ, सूत, मागध तथा वन्दीजन थे।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती लिखते हैं कि रुक्मिणी अपने महल से भवानी मन्दिर तक पालकी में गई अतः वे पूर्णतया सुरक्षित थीं। केवल अन्तिम १२-१५ फुट, महल से मन्दिर क्षेत्र तक, वे पैदल चलीं। उनके साथ मन्दिर के चारों ओर तैनात शाही अंगरक्षक थे।

आसाद्य देवीसदनं धौतपादकराम्बुजा ।  
 उपस्पृश्य शुचिः शान्ता प्रविवेशाम्बिकान्तिकम् ॥ ४४ ॥

**शब्दार्थ**

आसाद्य—पहुँचकर; देवी—देवी के; सदनम्—आवास; धौत—धोकर; पाद—पाँव; कर—तथा हाथ; अम्बुजा—कमल जैसे; उपस्पृश्य—जल का आचमन करके; शुचिः—पवित्र होकर; शान्ता—शान्त; प्रविवेश—अन्दर गई; अम्बिका-अन्तिकम्—अम्बिका के समक्ष।

देवी के मन्दिर में पहुँचकर रुक्मिणी ने सबसे पहले अपने कमल सदृश पैर तथा हाथ धोये और तब शुद्धि के लिए आचमन किया। इस तरह पवित्र एवं शान्त भाव से वे माता अम्बिका के समक्ष पधारीं।

तां वै प्रवयसो बालां विधिज्ञा विप्रयोषितः ।  
 भवानीं वन्दयां चक्रुर्भवपत्नीं भवान्विताम् ॥ ४५ ॥

**शब्दार्थ**

ताम्—उसको; वै—निस्सन्देह; प्रवयसः—बड़ी बूढ़ी; बालाम्—युवती को; विधि—विधि-विधान की; ज्ञाः—जानने वाली; विप्र—ब्राह्मणों की; योषितः—पत्नियाँ; भवानीम्—देवी भवानी को; वन्दयाम् चक्रुः—वन्दना करायी; भव-पत्नीम्—भव ( शिवजी ) की पत्नी की; भव-अन्विताम्—भव समेत ।

ब्राह्मणों की बड़ी बूढ़ी पत्नियाँ जो विधि-विधान में पटु थीं, रुक्मिणी को भवानी को नमस्कार कराने ले गईं जो अपने प्रियतम भगवान् भव ( शिवजी ) के साथ प्रकट हुईं ।

तात्पर्य : आचार्यों के अनुसार यहाँ पर भवान्विताम् शब्द सूचित करता है कि रुक्मिणी जिस अम्बिका मन्दिर में गई थीं उसकी अधिष्ठात्री देवी थीं जिनके पति उनका साथ देने के लिए प्रकट हो गए । इस तरह स्त्रियों द्वारा यह अनुष्ठान विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ ।

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती की टीका है कि विधिज्ञाः शब्द से यह जाना जा सकता है कि ब्राह्मणों की विद्वान पत्नियाँ रुक्मिणी की कृष्ण से विवाह करने की इच्छा से परिचित थीं अतः वन्दयां चक्रुः से यह सूचित होता है कि उन्होंने रुक्मिणी को उसके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया जो वह वास्तव में चाहती थीं ताकि भवानी की ही तरह रुक्मिणी अपने शाश्वत पुरुष संगी से मिल सकें ।

नमस्ये त्वाम्बिकेऽभीक्षणं स्वसन्तानयुतां शिवाम् ।  
भूयात्पतिर्मे भगवान्कृष्णास्तदनुमोदताम् ॥ ४६ ॥

#### शब्दार्थ

नमस्ये—मैं नमस्कार करती हूँ; त्वा—तुम्हें; अम्बिके—हे अम्बिका; अभीक्षणम्—निरन्तर; स्व—आपके; सन्तान—बच्चों; युताम्—सहित; शिवाम्—शिव-पत्नी को; भूयात्—होयें; पतिः—पति; मे—मेरे; भगवान्—भगवान्; कृष्णाः—कृष्ण; तत्—उसे; अनुमोदताम्—अनुमति दें ।

[ राजकुमारी रुक्मिणी ने प्रार्थना की ] हे शिव-पत्नी माता अम्बिका! मैं बारम्बार आपको तथा आपकी सन्तान को नमस्कार करती हूँ । कृपया यह वर दें कि भगवान् कृष्ण मेरे पति होएँ ।

अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासःस्रङ्माल्य भूषणैः ।  
नानोपहारबलिभिः प्रदीपावलिभिः पृथक् ॥ ४७ ॥  
विप्रस्त्रियः पतिमतीस्तथा तैः समपूजयत् ।  
लवणापूपताम्बूलकण्ठसूत्रफलेक्षुभिः ॥ ४८ ॥

#### शब्दार्थ

अद्भिः—जल से; गन्ध—सुगन्धित वस्तु; अक्षतैः—तथा अन्नों से; धूपैः—धूप से; वासः—वस्त्र से; स्रक्—फूल की मालाओं से; माल्य—रत्नजटित हारों; भूषणैः—तथा गहनों से; नाना—अनेक प्रकार की; उपहार—भेंटों; बलिभिः—तथा भेंटों से; प्रदीप—दीपक की; आवलिभिः—पंक्तियों से; पृथक्—अलग; विप्र-स्त्रियः—ब्राह्मण पत्नियाँ; पति—पतियों; मतीः—से युक्त; तथा—भी; तैः—इन वस्तुओं से; समपूजयत्—पूजा की; लवण—नमकीन पदार्थ; आपूप—पुए; ताम्बूल—पान; कण्ठ-सूत्र—उपवीत या जनेऊ; फल—फल; इक्षुभिः—तथा गन्ना से ।

रुक्मिणी ने जल, सुगन्धि, अन्न, धूप, वस्त्र, माला, हार, आभूषण तथा अन्य संस्तुत उपहारों से और दीपकों की पंक्तियों से देवी की पूजा की। उन्हीं के साथ साथ विवाहिता ब्राह्मणियों ने उन्हीं वस्तुओं से और नमकीन, पूए, पान-सुपारी, जनेऊ, फल तथा गन्ने के रस की भेंटें चढ़ा कर पूजा की।

तस्यै स्त्रियस्ताः प्रददुः शेषां युयुजुराशिषः ।  
ताभ्यो देव्यै नमश्चक्रे शेषां च जगृहे वधूः ॥ ४९ ॥

**शब्दार्थ**

तस्यै—रुक्मिणी को; स्त्रियः—स्त्रियों ने; ताः—उन; प्रददुः—दिया; शेषाम्—बचा हुआ ( प्रसाद ); युयुजुः—प्रदान किया; आशिषः—आशीर्वाद; ताभ्यः—उनको; देव्यै—तथा देवी को; नमः चक्रे—नमस्कार किया; शेषाम्—बचा हुआ ( प्रसाद ); च—तथा; जगृहे—ग्रहण किया; वधूः—दुलहन ने।

स्त्रियों ने दुलहन को प्रसाद दिया और फिर आशीर्वाद प्रदान किया। उसने भी उन्हें तथा देवी को नमस्कार किया और प्रसाद ग्रहण किया।

मुनिव्रतमथ त्यक्त्वा निश्चक्रामाम्बिकागृहात् ।  
प्रगृह्य पाणिना भृत्यां रत्नमुद्रोपशोभिना ॥ ५० ॥

**शब्दार्थ**

मुनि—मौन; व्रतम्—व्रत; अथ—तब; त्यक्त्वा—त्याग कर; निश्चक्राम—बाहर आई; अम्बिका-गृहात्—अम्बिका मन्दिर से; प्रगृह्य—पकड़कर; पाणिना—हाथ से; भृत्याम्—दासी को; रत्न—रत्नजटित; मुद्रा—अँगूठी से; उपशोभिना—शोभित।

तब राजकुमारी ने अपना मौन-व्रत तोड़ दिया और वह रत्नजटित अँगूठी से सुशोभित अपने हाथ से एक दासी को पकड़ कर अम्बिका मन्दिर के बाहर आई।

तां देवमायामिव धीरमोहिनीं  
सुमध्यमां कुण्डलमण्डिताननाम् ।  
श्यामां नितम्बार्पितरत्नमेखलां  
व्यञ्जस्तनीं कुन्तलशङ्कितेक्षणाम् ।  
शुचिस्मितां बिम्बफलाधरद्युति-  
शोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ॥ ५१ ॥  
पदा चलन्तीं कलहंसगामिनीं  
सिञ्जत्कलानूपुरधामशोभिना ।  
विलोक्य वीरा मुमुहुः समागता  
यशस्विनस्तत्कृतहृच्छयार्दिताः ॥ ५२ ॥

यां वीक्ष्य ते नृपतयस्तदुदारहास-  
 व्रीदावलोकहतचेतस उञ्जितास्त्राः ।  
 पेतुः क्षितौ गजरथाश्रगता विमूढा  
 यात्राच्छलेन हरयेऽर्पयतीं स्वशोभाम् ॥ ५३ ॥  
 सैवं शनैश्चलयती चलपद्मकोशौ  
 प्राप्ति तदा भगवतः प्रसमीक्षमाणा ।  
 उत्सार्य वामकरजैरलकानपद्मैः  
 प्राप्तान्ह्यैक्षत नृपान्ददृशेऽच्युतं च ॥ ५४ ॥  
 तां राजकन्यां रथमारुरुक्षतीं  
 जहार कृष्णो द्विषतां समीक्षताम् ॥ ५५ ॥

### शब्दार्थ

ताम्—उसको; देव—भगवान् की; मायाम्—माया; इव—सदृश; धीर—गम्भीर रहने वाले भी; मोहिनीम्—मोहने वाली; सु-  
 मध्यमाम्—सुघड़ कमर वाली; कुण्डल—कान के कुण्डलों से; मण्डित—सुसज्जित; आननाम्—मुख वाली; श्यामाम्—  
 निष्कलुष सौन्दर्य; नितम्ब—कूल्हे पर; अर्पित—स्थित; रत्न—रत्नजटित; मेखलाम्—करधनी; व्यञ्जत्—उभड़ रहे; स्तनीम्—  
 स्तनों वाली; कुन्तल—केशराशि का; शङ्कित—डरी हुई; ईक्षणाम्—नेत्रों वाली; शुचि—शुद्ध; स्मिताम्—मन्दहास-युक्त;  
 बिम्ब-फल—बिम्ब फल की तरह; अधर—होंठों वाली; द्युति—चमक से; शोणाद्यमान—लाल लाल हो रही; द्विज—दाँत;  
 कुन्द—चमेली की; कुड्मलाम्—कलियों जैसे; पदा—पाँवों से; चलन्तीम्—चलती हुई; कल-हंस—राजहंस की तरह;  
 गामिनीम्—गमन करने वाली; सिञ्जत्—रुनझुन करती; कला—पटुता से सँवारे; नूपुर—पायलों के; धाम—तेज से;  
 शोभिना—सुशोभित; विलोक्य—देखकर; वीराः—वीरगण; मुमुहुः—मुग्ध हो गये; समागताः—एकत्र हुए; यशस्विनः—  
 सम्मानित; तत्—उससे; कृत—उत्पन्न; हत्-शय—कामवासना से; अर्दिताः—पीड़ित; याम्—जिसको; वीक्ष्य—देखकर; ते—  
 वे; नृ-पतयः—राजागण; तत्—उसकी; उदार—विस्तृत; हास—हँसी से; व्रीडा—लज्जा का; अवलोक—तथा चितवन; हत—  
 चुराये गये; चेतसः—जिनके मन; उञ्जित—डालकर; अस्त्राः—अपने हथियार; पेतुः—गिर पड़े; क्षितौ—पृथ्वी पर; गज—  
 हाथियों; रथ—रथों; अश्व—तथा घोड़ों पर; गताः—बैठे; विमूढाः—मूर्छित होकर; यात्रा—जुलूस के; छलेन—बहाने; हरये—  
 हरि या कृष्ण के प्रति; अर्पयतीम्—अर्पित कर रही; स्व—अपना; शोभाम्—सौन्दर्य; सा—वह; एवम्—इस तरह; शनैः—धीरे  
 धीरे; चलयती—चलती हुई; चल—हिल रहे; पद्म—कमल के फूल के; कोशौ—दो कोश ( दो पाँव ); प्राप्तिम्—आगमन;  
 तदा—तब; भगवतः—भगवान् की; प्रसमीक्षमाणा—उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करती; उत्सार्य—धकेलते हुए; वाम—बाँयें; कर-  
 जैः—अपने हाथ के नाखुनों से; अलकान्—बालों को; अपाद्मैः—तिरछी चितवन से; प्राप्तान्—वहाँ उपस्थित; हिया—लज्जा  
 से; ऐक्षत—उसने देखा; नृपान्—राजाओं को; ददृशे—देखा; अच्युतम्—कृष्ण को; च—तथा; ताम्—उस; राज-कन्याम्—  
 राजकुमारी को; रथम्—उसका रथ; आरुरुक्षतीम्—चढ़ने के लिए तैयार; जहार—पकड़ लिया; कृष्णः—कृष्ण ने; द्विषताम्—  
 अपने शत्रु के; समीक्षताम्—देखते देखते ।

रुक्मिणी भगवान् की उस मायाशक्ति की तरह मोहने वाली प्रतीत हो रही थीं जो बड़े बड़े  
 धीर-गम्भीर पुरुषों को भी मोह लेती है। इस तरह राजागण उनके सुकुमार सौन्दर्य, उनकी सुघड़  
 कमर तथा कुण्डलों से सुशोभित मुख को निहारने लगे। उनके कूल्हे पर रत्नजटित करधनी  
 शोभा पा रही थी, उनके स्तन अभी उभड़ ही रहे थे और उनकी आँखें उनकी लटकती केशराशि  
 से चंचल लग रही थीं। वे मधुर हँसी से युक्त थीं और उनके चमेली की कली जैसे दाँतों से उनके  
 बिम्ब जैसे लाल होंठों की चमक प्रतिबिम्बित हो रही थी। जब वे राजहंस जैसी चाल से चलने  
 लगीं तो उनके रुनझुन करते पायलों के तेज से उनके चरणों की शोभा बढ़ गई। उन्हें देखकर

एकत्रित वीरजन पूर्णतया मोहित हो गये। कामवासना से उनके हृदय विदीर्ण हो गये। दरअसल जब राजाओं ने उनकी विस्तृत मुसकान तथा लजीली चितवन देखी तो वे सम्मोहित हो गये, उन्होंने अपने अपने हथियार डाल दिये और वे मूर्छित होकर अपने अपने हाथियों, रथों तथा घोड़ों पर से जमीन पर गिर पड़े। जुलूस के बहाने रुक्मिणी ने अकेले कृष्ण के लिए ही अपना सौन्दर्य प्रदर्शित किया। उन्होंने भगवान् के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए धीरे धीरे चलायमान कमलकोश रूपी दो चरणों को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने बाँए हाथ के नाखुनों से अपने मुख पर लटकते केश-गुच्छों को हटाया और अपने समक्ष खड़े राजाओं की ओर कनखियों से देखा। उसी समय उन्हें कृष्ण दिख गये। तभी अपने दुश्मनों के देखते देखते भगवान् ने राजकुमारी को पकड़ लिया जो उनके रथ पर चढ़ने के लिए आतुर थी।

**तात्पर्य :** श्रील जीव गोस्वामी के अनुसार रुक्मिणी अपने प्रियतम कृष्ण को देखने के लिए आतुर थीं इसलिए उन्हें चिन्ता थी कि उनके बालों के गुच्छे उनकी दृष्टि में बाधक न हों। अभक्त या असुरगण भगवान् के ऐश्वर्य को देखकर मोहित हो जाते हैं और सोचते हैं कि भगवान् की शक्ति उनकी स्थूल इन्द्रियों की तृप्ति के निमित्त है। लेकिन कृष्ण की अंतरंगा ह्लादिनी शक्ति की अंश रूपा रुक्मिणी तो एकमात्र कृष्ण की थीं।

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ने श्यामा प्रकार की स्त्री का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित उद्धरण दिया है—

*शीतकाले भवेद् उष्णो उष्णकाले तु शीतला ।*

*स्तनौ सुकठिनौ यस्याः सा श्यामा परिकीर्तिता ॥*

“वह स्त्री श्यामा कहलाती है, जिसके स्तन अत्यन्त कठोर होते हैं और उसके सामने आने वाला व्यक्ति जाड़े में अपने को गर्म तथा गर्मी में अपने को शीतल अनुभव करता है।”

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती यह भी इंगित करते हैं कि चूँकि रुक्मिणी का सुन्दर रूप भगवान् की अन्तरंगा शक्ति का प्राकट्य है, अतः अभक्तगण उसकी ओर नहीं देख सकते। इस तरह विदर्भ में एकत्र बलवान राजा भगवान् की माया शक्ति या रुक्मिणी के अंश को देखकर कामुक हो उठे थे। दूसरे शब्दों में, भगवान् की नित्य संगिनी को देखकर कोई काम-मोहित नहीं हो सकता क्योंकि काम से कलुषित

होते ही मन को माया का आवरण आध्यात्मिक जगत तथा उसके निवासियों के आद्य सौन्दर्य से विलग कर देता है।

अन्त में, श्रीमती रुक्मिणी देवी अन्य राजाओं को तिरछी नजर से देखकर लजा सी गई क्योंकि वे उन निकृष्टजनों की नजरों से अपनी नजरें नहीं मिलाना चाहती थीं।

रथं समारोप्य सुपर्णलक्षणं

राजन्यचक्रं परिभूय माधवः ।

ततो ययौ रामपुरोगमः शनैः

शृगालमध्यादिव भागहृद्धरिः ॥ ५६ ॥

शब्दार्थ

रथम्—रथ पर; समारोप्य—उठाकर; सुपर्ण—गरुड़; लक्षणम्—चिह्न वाले; राजन्य—राजाओं के; चक्रम्—घेरे को; परिभूय—हराकर; माधवः—कृष्ण; ततः—वहाँ से; ययौ—चले गये; राम—राम द्वारा; पुरः-गमः—आगे आगे; शनैः—धीरे धीरे; शृगाल—सियारों के; मध्यात्—बीच से; इव—जिस तरह; भाग—अपना हिस्सा; हृत्—निकाल कर; हरिः—सिंह।

राजकुमारी को उठाकर अपने गरुड़-ध्वज वाले रथ में बैठाकर माधव ने राजाओं के घेरे को पीछे धकेल दिया। वे बलराम को आगे करके धीरे से उसी तरह बाहर निकल गये जिस तरह सियारों के बीच से अपना शिकार उठाकर सिंह चला जाता है।

तं मानिनः स्वाभिभवं यशःक्षयं

परे जरासन्धमुखा न सेहिरे ।

अहो धिगस्मान्यश आत्तधन्वनां

गोपैर्हतं केशरिणां मृगैरिव ॥ ५७ ॥

शब्दार्थ

तम्—उसको; मानिनः—अभिमानि; स्व—अपने; अभिभवम्—हार; यशः—अपने सम्मान; क्षयम्—विनष्ट करते हुए; परे—शत्रुगण; जरासन्ध-मुखाः—जरासन्ध इत्यादि; न सेहिरे—सहन नहीं कर सके; अहो—ओह; धिक्—धिक्कार है; अस्मान्—हमें; यशः—सम्मान; आत्त-धन्वनाम्—धनुषधारियों का; गोपैः—ग्वालों द्वारा; हतम्—ले जाये गये; केशरिणाम्—सिंहों के; मृगैः—छोटे जानवरों द्वारा; इव—मानों।

भगवान् के जरासन्ध जैसे शत्रु राजा, इस अपमानजनक हार को सहन नहीं कर सके। वे चीख पड़े, “ओह! हमें धिक्कार है! यद्यपि हम बलशाली धनुर्धर हैं, किन्तु इन ग्वालों मात्र ने हमसे हमारा सम्मान उसी तरह छीन लिया है, जिस तरह छोटे छोटे पशु सिंहों का सम्मान हर लें।”

तात्पर्य : इस अध्याय के अन्तिम दो श्लोकों से यह स्पष्ट है कि असुरों की विकृत बुद्धि उन्हें

वस्तुओं को सच्चाई से सर्वथा विपरीत दिखलाती है। यह स्पष्ट कहा गया है कि कृष्ण रुक्मिणी को उसी तरह हर ले गये जिस तरह एक सिंह सियारों के झुंड से अपना शिकार ले जाता है। किन्तु असुरों ने अपने को सिंह की तरह और कृष्ण को एक क्षुद्र प्राणी जैसा अनुभव किया। कृष्णभावनामृत के बिना जीवन अत्यन्त संकटमय हो जाता है।

*इस प्रकार श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत “कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का अपहरण” नामक तिरपनवें अध्याय के श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।*